॥ श्रीः ॥

लघुपाराशरी

॥ उडुदायप्रदीपाभिधा ॥

व्याकरणाचार्य-पण्डित-मदनमोहनपाठककृत-संस्कृतान्वयभाषानुवाद-सहिता ।

प्रथमबार

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

सन् १९०८ ई०

प्रस्तावना।

ज्योतिषशास्त्र से जिन्हें थोड़ा भी संबंध है, उनमें उनलोगों की संख्या बहुत न्यून होवेगी जो लघुपाराशरी से परिचित न होवें। यह ग्रंथ बड़ा प्रामाणिक और सर्वमान्य है। इसके तत्त्वों को जानने वाले विद्वान् ज्योतिषियों का कथन है कि "यह ग्रंथ लघु होने पर भी बड़ाही गहन है"। इस ग्रंथमें चार अध्याय हैं, संज्ञाध्याय, राजयोगाध्याय, आयुर्दायाध्याय और अंतर्दशाध्याय। संज्ञाध्याय तनु धन इत्यादि संज्ञाओं की विशेष संज्ञा है, राज योगाध्यायमें राजयोग का संभव तथा असंभव कहा है, आयुर्दायाध्यायमें आयुष्य और मारकेश के फलाफल का निरूपण है, और अंतर्दशाध्याय में सूर्यादि ग्रहोंकी अंतर्दशा और प्रत्यंतरदशा का निरूपण है।

इन चारों अध्यायों के विषय पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि फलित ज्योतिष संसार का कोई विद्वान् इस ग्रंथका उत्तम रीति पर अभ्यास करेगा, तो अवश्यही इन विषयों में एक अच्छा भविष्यद्वक्ता होवेगा। यह विचार कर बनारस भार्गवपुस्त-कालय के मनेजरने मुझे इस ग्रंथका भाषानुवाद करनेको कहा। मैंने मूलके साथ सरल संस्कृत के अन्वय और भाषानुवाद को मिलाकर ग्रंथ तय्यार कर दिया है।

मैं कोई ज्योतिषी नहीं हूं, संभव है कि इसमें अनेक त्रुटियां रह गई हों। विद्वज्जन उसे सुधार लेवेंगे। यह ग्रंथ भाषा में केवल मेरे समान अल्पज्ञजनों के बोधार्थ लिखा गया है। वास्तविक में यदि इसे गुरु से पठित पाठानुपूर्वी कहें तो अनुचित न होवेगा

अस्तु--इति शुभम्

२२ । ४ । ०७

पं. मदनमोहन पाठक
गयाघाट, बंगालीवाड़ा
बनारस

श्रीगणेशायनमः ॥

लघुपाराशरी ।

संस्कृतान्वयभाषाटीकासहिता ।

विश्वेशपादयुगलं प्रणिपत्य सम्यक्
शैलात्मजां सतनयां दिननायकं च ॥
होरां पराशरमुनेर्विशदीकरोमि भाषा-
मयैः सुललितैःपदसन्निवेशैः ॥ १ ॥

ग्रंथ में कौनसा विषय है ? इससे कौनसा प्रयो-जन सिद्ध होता है ? ग्रंथ के अनेक विषयों का पर-स्पर ग्रंथ के साथ कौन सा संबंध है ? और इसका अधिकारी कौन है ? इन चारों बातों को प्रकट करने के लिये प्राचीन विद्वानों ने मंगलाचरण करने का संप्रदाय बांधा है । इस में पहिले आधे भाग से मंगल करके उसके द्वारा विघ्नों का नाश स्वीकार

करते हैं, और शेष आधे भाग से उपरोक्त चारों बात स्वीकार करते हैं। इन चारों में विषय प्रयोजन और अधिकारी का प्रतिपादन बहुधा ग्रंथकार मंगलाचरण में कर देते हैं। संबंध के विषय में उनका सिद्धांत है कि ग्रंथका और उसके विषयों का परस्पर प्रतिपाद्य और प्रतिपादक संबंध है। विषयों का प्रतिपादन किया जाता है, और ग्रंथ उनका प्रतिपादन करते हैं। इससे उसके विषयमें ग्रंथकार कुछ विशेष उद्योग नहीं करते। वह ग्रंथके देखने से ही विदित होजाता है। यह नियम सब ग्रंथों में पाला जाता है। इसी सार्वजनिक नियमानुसार महर्षि पराशर उडुदायप्रदीप (लघुपाराशरी) ग्रंथके प्रारम्भ में मंगलाचरण करते हैं—

सिद्धान्तमौपनिषदं शुद्धान्तं परमेष्ठिनः।
शोणाधरंमहःकिञ्चिद्वीणाधरमुपास्महे॥ १।

(सम्बन्धः) वयम् औपनिषदं सिद्धान्तं, पर

मेष्ठिनः शुद्धान्तं, वीणाधरं, शोणाधरं (च) किञ्चित् महः उपास्महे ॥ १ ॥

(अर्थ) श्रुतियों का सिद्धांत, प्रजापति का शुद्ध अन्तःपुर, बिंबा फल के समान लाल अधरवाले, और वीणा धारण करनेवाले, किसी तेज की मैं आराधना करताहूं। तात्पर्य यह है कि, ग्रन्थकार सरस्वती देवी की उपासना करने के लिये कहते हैं कि-वह वेदांतों का सिद्धांत है, ब्रह्मा की गृहिणी है, अत्यन्त गौरवर्ण है, और वीणाधारण किये है इससे उसकी आराधना मंगल है ॥ १ ॥

वयं पाराशरीं होरामनुस्मृत्य यथाविधि
उडुदायप्रदीपाख्यं कुर्मो दैवविदां मुदे २

(सम्बन्धः) वयम् पाराशरीं होरां अनुस्मृत्य दैवविदां मुदे यथाविधि उडुदायप्रदीपाख्यं ग्रंथं कुर्मः २

(अर्थ) मैं पराशर महर्षि के होरा-शास्त्र को, अपनी मति के अनुसार विचार कर ज्योतिषियों के आनंद के लिये अश्विनी आदि नक्षत्रों के फलों को सूचन करने वाला 'उडुदायप्रदीप' ग्रन्थ को सम्पादन करता हूं ॥२॥

फलानि नक्षत्रदशा प्रकारेण विवृणमहे ॥
दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता

(सम्बन्धः) (वयम्) नक्षत्रदशा—प्रकारेण फलानि विवृणमहे । अत्र च दशा विंशोत्तरी ग्राह्या. अष्टोत्तरी (अत्र) न मता ॥ ३ ॥

(अर्थ) मैं इस ग्रन्थ में नक्षत्र दशा के भेद से प्राणियों के सुख और दुःखों का व्याख्यान करूंगा । परंतु इस ग्रन्थ में विंशोत्तरी दशा ली जावेगी, अष्टोत्तरी (योगिनी) दशा मुझे सम्मत नहीं है । इस स्थानपर प्रसंग से दशा उसकी अन्तर्दशा आदि का विचार करदेना अनुचित न होगा । ज्योतिष शास्त्र के विद्वान् विंशोत्तरी दशा के विषय में लिखते हैं कि—
"तनु ६ नय १० सित ७ जागा १८ तापि १६ धान्या१६ सटा१७सा७नखे२०इति गादिना सा भास्करादिक्रमेण" इस श्लोक से सूर्य आदि ग्रहों की दशा स्पष्ट होती है । सूर्य आदि ग्रहोंका क्रम यहहै—सूर्य चंद्र मंगल राहु बृहस्पति शनि बुध केतु और शुक्र । ये ग्रह दशाके स्वामीहैं । दशा लगानेका क्रम यहहै कि अश्विनी आदि नक्षत्रों

में से अश्विनी और भरणी को छोड़ कर कृत्तिका से प्रारंभ कर जन्म नक्षत्र तक की संख्या गिन लेवे। फिर उस गिनी संख्या में नव से भाग देवे। जो शेष बचे वही ग्रह की दशा होवेगी, अर्थात् कृत्तिका से प्रारंभ करने पर जो ग्रह जन्म नक्षत्र में होवेगा प्रथम उसी की दशा होवेगी। इसप्रकार कृत्तिका उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढा में जन्म होने से सूर्य की दशा छः वर्ष की होती है। रोहिणी हस्त और श्रवण नक्षत्र में जन्म होने से दश वर्ष की चन्द्रमा की दशा होती है। इसी प्रकार मंगल की सात वर्ष की, राहु की अठारह वर्ष, बृहस्पति की सोलह वर्ष, शनि की उन्नीस वर्ष, बुध की सत्रह वर्ष, केतु की सात वर्ष, और शुक्र की बीस वर्ष की दशा होती है। इन में भुक्त दशा से कुछ फल नहीं है इससे भोग्य दशा का फल कहना उचित है। उसका प्रकार यह है कि अपने जन्म की दशा को जन्म नक्षत्र की घड़ियों से गुन देना, फिर जन्म नक्षत्र की घड़ियों से भाग देने पर जो बचे वह भुक्त दशा होती है, और जो बचे वह भोग्य दशा होती है। भुक्त वर्षों में भाग देने से जो शेष रहे उनका फल कहना। इससे अंतर्दशा का ज्ञान होता है। अंतर्दशा के जानने का यह उपाय है कि

जिस दशा की अंतर्दशा बनाना हो उस दशा को तीन से गुणकर जो लब्ध होवे उसे फिर तीन से गुणन करे, फिर तीन का भाग देने से जो शेष रहे वही अंतर्दशा के मास आदि होते हैं। जैसे सूर्य की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा लाना होवे तो उसकी दशा के छः वर्ष को तीन से गुणे तब अठारह होवेंगे, उन्हें फिर छः से गुणने पर एक सो आठ होता है—यहां तीस से भाग देने पर तीन मास और अठारह दिनकी सूर्य दशा में सूर्य की अंतर्दशा होती है। छः महीना चन्द्रमा की चार महीना छः दिन मंगल की, दश महीना चौबीस दिन राहु की नव महीना अठारह दिन बृहस्पति की, ग्यारह महीना और बारह दिन शनि की, दश महीना छः दिन बुध की और चार महीना छः दिन केतु की अंतर्दशा होती है. यह सूर्य की दशा जानने का उपाय है। इसी भांति और और ग्रहों की महादशा में अंतर्दशा आती हैं। दशा और अंतर्दशा के जानने के अनेक उपाय ग्रंथों में लिखे हैं जिन्हें ग्रंथ बढ जाने के भय से मैं नहीं लिखता ॥३॥

बुधैर्भावादयः सर्वे ज्ञेयाःसामान्यशास्त्रतः॥
एतच्छास्त्रानुसारेण संज्ञां ब्रूमो विशेषतः ४

(सम्बन्धः) बुधैः तन्वादयो द्वादशभावाः सामान्यशास्त्रतः ज्ञेयाः । एतत् शास्त्रानुसारेण तु वयं विशेषतः संज्ञां ब्रूमः ॥ ४ ॥

(अर्थ) पंडितों को उचित है कि वे तनु धन सहज सुख सुत रिपु जाया मृत्यु धर्म कर्म आय और व्यय इन नामों को सामान्य शास्त्रों से जानलेवें। मैं विशेष नाम इस शास्त्र (ग्रंथ) से कहूंगा। तात्पर्य यह है कि ग्रहोंके स्वभाव और उनके फल यवनों के ताजक (जातक) ग्रंथों से जानना। उसकाप्रकार इसभांति हैकि ग्रहोंकेस्वभाव नव प्रकार के होते हैं। १ दीप्त २ स्वस्थ ३ प्रमुदित ४ शांत ५ दीन ६ अतिदुःखित ७ विकल ८ खल और ९ कोपी। उच्चराशि का ग्रह दीप्त होता है। स्वस्थान का स्वामी ग्रह स्वस्थ होता है। मित्र स्थान का ग्रह प्रमुदित होता है। और उसी स्थान का ग्रह शांत होता है। तुल्य स्थान का ग्रह दीन होता है। शत्रुस्थान का ग्रह अतिदुःखित होता है। पाप ग्रह के साथ का ग्रह विकल होता है। खल स्थान का ग्रह खल होता है। सूर्य के साथ रहनेवाला ग्रह कोपी होता है। इनका फल आगे स्पष्ट होवेगा ॥ ४ ॥

पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनिजीवकुजाः पुनः।
विशेषतश्च त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान्॥५॥

(सम्बन्धः) सर्वे रव्यादयः ग्रहाः स्वाधिष्ठित स्थानात् सप्तमस्थानं तत्र स्थितं ग्रहं च पश्यन्ति शनि-जीव-कुजाः तु यथा संख्यं त्रिदश-त्रिकोण-चतुरष्टमान् अपि पश्यन्ति ॥ ५ ॥

(अर्थ) सूर्य आदि सब ग्रह अपने रहने के स्थान से सप्तम स्थान और उस में रहने वाले ग्रह को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। परन्तु शनि बृहस्पति और मंगल तो सप्तम स्थान, त्रिकोण और चतुर्थ तथा अष्टम स्थान को भी पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। अर्थात् शनि सप्तम तृतीय और दशम स्थान को, बृहस्पति सप्तम पंचम और नवम स्थान को, और मंगल सप्तम चतुर्थ और अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है॥ ५॥

सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः
पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः॥६

(संबन्धः) त्रिकोणनेतारः सर्वे ग्रहाः शुफल

प्रदाः भवन्ति यदि ते पापग्रहाः। अथ शुभग्रहाः अपि त्रिषडायानां यदि पतयः तदा पापफलप्रदाः भवन्ति ॥ ६ ॥

(अर्थ) पापग्रह भी यदि पंचम और नवम स्थानमें रहते हैं, तो शुभ फल देनेवाले होते हैं. और यदि शुभ ग्रह भी तृतीय षष्ठ और एकादश स्थानमें होवें तो अशुभ देनेवाले होते हैं। तात्पर्य यह है कि सब ग्रह स्वभाव से ही शुभफल देनेवाले होते हैं। परंतु यदि पाप ग्रहभी पंचम और नवम स्थानमें रहते हैं तो वेभी शुभ फल देते हैं, शुभ ग्रहतो शुभ फल देतेही हैं। शुभ ग्रहभी यदि तृतीय षष्ठ एकादश स्थान में होवें, तो वेभी अशुभ फल देते हैं, पापग्रह तो अशुभ फल देतेही हैं ॥ ६ ॥

दिशन्तिशुभंनृणांसौम्याःकेन्द्राधिपायदि
क्रूराश्चेदशुभं ह्येते प्रबलाश्चोत्तरोत्तराः ॥ ७ ॥

(सम्बन्धः) सौम्याः ग्रहाः चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्राः यदि केन्द्राधिपतयः तदा नृणां शुभं फलं न दिशं-ते । चेत् क्रूराः सूर्य-भौम-शनयः केन्द्राधिपाः

स्युः तदा अशुभं न दिशन्ति। एते त्रिकोणपतय त्रिषडायपतयः केन्द्रपतयः च उत्तरोत्तरं प्रबलाः भवंति ७

(अर्थ) सौम्य ग्रह अर्थात् चन्द्रमा बुध बृहस्पति और शुक्र यदि प्रथम चतुर्थ सप्तम और दशम स्थानके स्वामी होवें, तो वे मनुष्यों को शुभ फल नहीं देते। परन्तु यदि क्रूर अर्थात् सूर्य मंगल भौम और शनि केन्द्र के स्वा होवें, तो अशुभ फल नहीं देते। इन पंचम और नवम स्थान के, तृतीय षष्ठ और एकादश स्थान के, और प्रथम चतुर्थ सप्तम और दशम स्थान के स्वामियों में पूर्व स्थान के स्वामियों से उत्तर २ के स्वामी ग्रह प्रबलहोते हैं। अर्थात् पंचम के स्वामी से सप्तम का स्वामी प्रबल होता है। तृतीय के स्वामी से षष्ठ का स्वामी प्रबल होत है। षष्ठ के स्वामी से एकादश का स्वामी प्रबल हो केंद्र के स्वामियों में भी इसी प्रकार प्रथम के स्वामी चतुर्थ का, चतुर्थ के स्वामी से सप्तम का, और सप्तम के स्वामीसे दशम का स्वामी प्रबल होता है। इससे जो ग्रह प्रबल होता है उसी के अनुसार शुभ और अशुभ फल होता है * ॥ ७ ॥

---

* राशियों के स्वामी के विषय में लिखा है कि—मेष और वृश्चिक राशि का

लग्नाद्व्ययद्वितीयेशौ परेषां साहचर्यतः ॥
स्थानान्तरानुगुण्येन भवतःफलदायकौ॥८॥

(संबंधः) व्यय-द्वितीयेशौ परेषां ग्रहाणां साहचर्यतः स्थानान्तरानुगुण्येन (शुभाशुभ) फलदायका भवतः ॥ ८ ॥

(अर्थ) जन्म लग्न से द्वितीय और द्वादश स्थानके स्वामी दूसरे ग्रहों के संबंध में उनके स्थान के अनुसार शुभ और अशुभ फल देते हैं। अर्थात् द्वितीयेश और द्वादशेश शुभ और अशुभ ग्रह के संबंध से, और मित्र स्थान के होने से मित्र द्वारा, और शत्रु स्थान के होने से ... द्वारा शुभ और अशुभ फल देते हैं। इसी भांति आदि पूर्वोक्त ग्रहों का शुभाशुभ फल होता है। आदि ग्रहों का फल इस भांति से है। दीप्त ग्रह दशा में राज्यलाभ होताहै, उत्साह बढ़ताहै, शूरता ...ती है, धन मिलता है, वाहन की प्राप्ति होती है, स्त्री

...मी मंगल है। वृष और तुला राशि का स्वामी शुक्र है। कन्या और मिथुन का ...मी बुध है। कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा है। धन और मीन राशि का स्वामी ...स्पति है। मकर और कुंभ राशि का स्वामी शनि है। सिंह राशि का स्वामी सूर्य है

और पुत्र का लाभ होता है, शुभ होता है. भाई बंधुओं
में सत्कार होता है, राजा के यहां सत्कार होता है, औ
विद्या प्राप्त होती है। स्वस्थ ग्रह की दशा में, शरीर स्वस्थ
रहता है, राजा से मिले हुए धन आदि का सुख होता
है, विद्या यश प्रीति और दूरदेश से महिमा प्राप्ति होती
है, स्त्री धन पृथिवी और पुत्र का सुख होता है। प्रमुदित
ग्रहकी दशा में वस्त्र पृथिवी सुगंध पुत्र धन धीरता पु
और धर्म शास्त्र का श्रवण घोड़ा रथ हाथी रंग विरंग
के कपड़े और आभूषण का सुख होता है। शांत ग्रह की
दशामें सुख और धैर्य होता है, भूमि पुत्र स्त्री वाहन
विद्या विनोद धर्म शास्त्र बहुत धन और राजा की ओर
से पूजा आदि का सुख होता है। दीन ग्रह की दशा
अपना स्थान छूट जाता है. बंधुओं से विरोध होता
वह नीचजीवन से जीवन काटता है, अपने कु
अलग हो जाता है, और रोगों से पीड़ा पाता है।
दुःखित ग्रह की दशामें सदा नाना प्रकार का दुःख
है, परदेश में रहता है, बंधुओं से वियोग होता है,
चौर अग्नि तथा राजा की ओर से भय भीत रहता
विकल ग्रहकी दशा में विकल रहता है, मन में पीड़ा रह
है मित्र आदि की मृत्यु होती है, विशेष कर के स्त्री

ोर वाहन का नाश होता है, और चोर की पीड़ा होती । खल ग्रह की दशा में लोगों से वैर होता है, अपने ुटुंब से और पिता से बियोग होता है शत्रुओं से धन ौर भूमि का नाश होता है, और अपने कुटुंब के लोग िंदा करते हैं। कोपी ग्रहकी दशामें नानाप्रकार के पाप र्म बनते हैं, विद्या धन स्त्री और पुत्र का नाश होता है त्र आदि कष्ट पाते हैं, और नेत्र में रोग होताहै ॥ ९ ॥

ाग्यव्ययाधिपत्येनरन्ध्रेशो न शुभप्रदः ॥
ावशुभसन्धातालग्नाधीशोऽपिचेत्स्वयम्

(सम्बन्धः) भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशः शुभ-
दः न भवति, सः एव स्वयं लग्नाधीशः अपि चेत्
दा शुभसन्धाता भवति ॥ ८ ॥

(अर्थ) अष्टम स्थान का स्वामी यदि नवम स्थान से ारहवें स्थान का स्वामी होवे, तो शुभ फल देनेवाला हीं होता, परन्तु यदि वही अष्टम का स्वामी लग्नेश ोवे तो शुभ फल देता है। कोई आचार्य कहते हैं कि अष्टम स्थान से जो अष्टम होवे उसका स्वामी भी रं-ाश होता है, इस भांति तृतीयेश भी रंध्रेश होकर

बारहवें स्थान का स्वामी होवेगा, और तब वह
अशुभ फल कारक होवेगा। और अष्टमेश द्वादशे
होकर अशुभ फल देता है, वैसेही तृतीयेश भी देवेग
जैसे कर्क लग्न होवे, तो बुध रंध्रेश होता है, और मक
लग्न में बृहस्पति होता है। यदि तृतीयेश रंध्रेश नह
होता, तो द्वादशेश भी नहीं होवेगा।

केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुशुक्रयोः
मारकत्वेऽपि च तयोर्मारकस्थानसंस्थि

(सम्बन्धः) केन्द्राधिपत्यदोषः तु गुरुशुक्रयं
एव बलवान् भवति च तयोः मारकस्थानसंस्थि
अपि मारकत्वे भवति ॥ १० ॥

(अर्थ) केन्द्राधिपति का दोष, अर्थात् प्रथम चतु
सप्तम और दशम स्थान के स्वामी पन का दोष, गु
और शुक्र के ही विषय में प्रबल होता है। और मा
रक स्थान में अर्थात् द्वितीय और सप्तम स्थान में उ
दोनों का रहना भी और मारकों से इन दोनों में
बल मारकता बताता है ॥ २ ॥

रस्तदनु चन्द्रोऽपि भवेत्तदनु तद्विधः ॥
रन्ध्रेशत्वदोषस्तु सूर्याचन्द्रमसोर्भवेत् ॥

(सम्बन्धः) तद्विधः बुधः तदनु (शुक्रोपक्षया
ापेक्षया च न्यूनमाकारत्वदोषवान्) तद्विधः
ः अपि तदनु (मारकः चन्द्रः अपि बुधापेक्षया
नमारकत्वदोषवा न्) अस्ति । सूर्याचन्द्रमसोस्तु
शत्वदोषः न भवेत् ॥ ११ ॥

(अर्थ) केन्द्र का स्वामी बुध, बृहस्पति और शुक्र से
दोष वाला होता है। और केन्द्र का स्वामी चन्द्रमा
से कम दुष्ट होता है, अर्थात् बुध में मारक शक्ति
ति और शुक्र से कम है, और चन्द्रमा में बुध से
कम है। परंतु सूर्य और चन्द्रमा को अष्टमस्थान के
ामी पन का दोष नहीं छूता है। अर्थात् ये दोनों मारक
ीं होते ॥ ११ ॥

जस्य कर्मनेतृत्वप्रयुक्ता शुभकारिता ॥
कोणस्यापि नेतृत्वे न कर्मेशत्वमात्रतः ॥

(सम्बन्धः) कुजस्य कर्मनेतृत्वप्रयुक्ता त्रिक
णस्य अपि नेतृत्वे (सति) भवति न कर्मश
मात्रतः ॥ १२ ॥

(अर्थ) मंगल तभी शुभ फल देने वाला होता
जब वह पंचम और नवम स्थान का स्वामी होकर द
स्थान का स्वामी होताहै। केवल दशम स्थान का स्वा
होनेसेही मंगल शुभ फल दाता नहीं होता। यह य
उसी की ग्रह कुंडली में पड़ता है जिसका जन्म कर्क ल
में होता है। कारण यह है कि कर्क लग्न से वृश्चिक पं
और मेष दशम पड़ता है, और मंगल उनका स्वामी
पाराशरी में इसी प्रसंग से ग्रहों का शुभ होना अ
होना, और योगकारक होना स्पष्ट रीतिमें लिखा
संक्षेप से कुछ लिख दिया जाता है। शनि बुध और
पापग्रह हैं और वृहस्पति और सूर्य शुभग्रह हैं। प
केवल योग सेही शनि और वृहस्पति शुभ फल देनेव
नहीं होते। वृहस्पति का पापग्रह होना परतंत्रता से
यह बात निश्चित है। यदि शुक्र मारक होता है तो
आपही अशुभ कर्ता है। इन दोनों के संग से और
ग्रह भी पापग्रह होजाते हैं। यह फल मेष राशि में ि

जन्म होता है, उसका है। वृष राशि में उत्पन्न पुरुष
लेये बृहस्पति शुक्र और चंद्रमा पापग्रह हैं। शनि
र बुध शुभ ग्रह हैं। इसको राज्य योग केवल शनि
ता है। इसके लिये बृहस्पति शुक्र चंद्रमा पापग्रह
र मारक होते हैं। मिथुन राशि में उत्पन्न पुरुष के
मंगल बृहस्पति और सूर्य पापग्रह हैं, और शुक्र
ग्रह हैं। शनि के साथसे बृहस्पति पापग्रह होता है
ग्रह होने पर भी यह चन्द्रमा मारक नहीं होता।
सब फल सूर्य के हैं। कर्क राशि में उत्पन्न पुरुष के
ये शुक्र और बुध पापग्रह हैं, और मंगल और बृह-
ति शुभग्रह हैं। योगकारक ग्रह केवल मंगल है,।
नि पूर्णमारक है, और शेष कष्ट कारक हैं। सिंहराशि
न्न पुरुष के लिये बुध और शुक्र पापग्रह हैं, और
ल शुभग्रह है। परंतु मंगल और शुक्र के संयोग से
शुभ फल नहीं होता। बुध आदि पापग्रह मारक
क उसे नष्ट कर देते हैं। कन्याराशि में उत्पन्न
ष के लिये मंगल बृहस्पति और चन्द्रमा पापग्रह हैं,
र शुक्र शुभ ग्रह है। शुक्र और बुध ही राजयोग
रक ग्रह हैं। मृत्यु कारक शुक्र है, और शेष केवल
ष्ट कारक हैं। तुला राशि में उत्पन्न पुरुष के लिये

बृहस्पति सूर्य और मंगल पापग्रह हैं, और शनि वा
शुभग्रह हैं चंद्रमा और बुध राज्य योग करने व
होते हैं। मंगल पूर्ण मारक है, वा पहिले मारक हैं। इ
मारक नहीं है। वृश्चिक राशि में उत्पन्नपुरुष के लि
बुध मंगल और शुक्र पापग्रह हैं, और बृहस्पति प
मारक, और बुध आदि कष्ट कारक हैं। धन रा
उत्पन्न पुरुष के लिये शुक्र ही पापग्रह है। और बुध अ
सूर्य शुभ हैं। सूर्य और बुध योग कारक हैं। मृत्यु क
शनि हैं। शुक्र आदि पापग्रह कष्ट कारक होते हैं। मक
राशि में उत्पन्न पुरुष के लिये मंगल बृहस्पति और चन
मा पापग्रह हैं, और शुक्र और बुध शुभ हैं। साक्ष
मृत्यु कर्ता शनि हैं, और मंगल आदि कष्ट कारक है
एक शुक्र शुभ फल करता है। कुंभ राशि में उ
पुरुष के लिये बृहस्पति चंद्रमा और मंगल पाप ग्रह हैं, अ
शुक्र शुभ है। मंगल और शुक्र राजयोग करने वाले
बृहस्पति पूर्ण मारक है, और मंगल आदि कार
हैं। मीन राशि में उत्पन्न पुरुष के लिये शनि शुक्र स
और बुध पापग्रह हैं, और मंगल और चंद्रमा शुभ
मंगल और बृहस्पति राजयोग कर्ता हैं। मंगल श
और बृहस्पति पापग्रह तथा मारक हैं ॥ १२ ॥

यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेशसंयुतौ ॥
तत्तत्फलानिप्रबलौप्रदिशेतां तमोग्रहौ १३॥

(सम्बन्धः) तमोग्रहौ यत् यत् भावगतौ अपि यत् यत् भावेशसंयुतौ वा स्याताँ, तत् तत् फलानि प्रबलौ सन्तौ अपि प्रदिशेताम् ॥ १३ ॥

(अर्थ) राहु और केतु जिस २ स्थान में रहैं, वा जिस २ स्थान के स्वामी के साथ रहैं, तो प्रबल होने पर भी उन २ स्थानों के स्वामी ग्रहों का फल ही करते हैं। अर्थात् वे दोनों स्वतंत्र शुभ वा अशुभ फल नहीं करते, किंतु शुभ और अशुभग्रह के फल में सहायता करते हैं।

इति भाषानुवादसहिते उडुदायप्रदीपे
संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥

केन्द्रत्रिकोणपतयः सम्बन्धेन परस्परम् ॥
इतरैरप्रसक्ताश्चेद्विशेषफलदायकाः ॥ १ ॥

(सम्बन्धः) चेत् इतरैः (त्रिषडष्टमपतिभिः) अप्रसक्ताः केन्द्रत्रिकोणपतयः परस्परसम्बन्धेन विशेषफलदायकाः भवन्ति ॥ १ ॥

(अर्थ) यदि तृतीय षष्ठ एकादश और अष्टम स्थान के स्वामियों के साथ संबंध न रखते हुये प्रथम चतुर्थ सप्तम और दशम भाव के स्वामी, पंचम और नवम भाव के स्वामी के साथ संबंध रखते होवें, तो विशेष फल देने वाले होते हैं। केंद्र और त्रिकोण के स्वामियोंका संबंध चार प्रकार का होता है। प्रथम एक का दूसरे के स्थान में रहना, द्वितीय एक की पूर्ण दृष्टि दूसरे पर हो तृतीय दोनों में से एक की पूर्ण दृष्टि का होना; परन्तु दूसरे की दृष्टि का न होना, और चतुर्थ एकही स्थान दोनों का रहना। जैसे १ मेष वा वृश्चिकराशि में सूर्य होवे, और सिंह में मंगल, तो दोनों का संबंध होता है २ मेषराशि में मंगल रहे, और तुला में सूर्य, तो दोनों की दोनों पर पूर्णदृष्टि रहती है। ३ सिंहराशि का मंगल मीनराशि के सूर्य को देखता है, परन्तु सूर्य मंगल नहीं देखता। ४ सूर्य और मंगल दोनों का वृषराशि होना। इन चारों संबंधों में पहिला २ संबंध अगले से बलवान् होताहै। इसीभांति और २ राशि स्वामि का संबंध समझ लेना ॥ १ ॥

केन्द्रत्रिकोणनेतारौ दोषयुक्तावपि स्वयम् ॥
सम्बन्धमात्राद्बलिनौ भवेतां योगकारकौ ॥ २ ॥

(सम्बन्धः) केन्द्रत्रिकोणनेतारौ स्वयं दोषयुक्तौ अपि सम्बन्धमात्रात् बलिनौ सन्तौ योगकारकौ भवेताम् ॥ २ ॥

(अर्थ) चतुर्थ सप्तम दशम पंचम और नवम स्थानों के स्वामी यदि आप दोषवाले भी होवें, तो पहिले श्लोक में कहे हुये चारो संबंध सेही प्रबल होकर शुभ फलदायक योग करने वाले होजाते हैं। पाराशरी में इस बातका संग्रह इस भांति कियाहै कि पंचम और नवम स्थान विशेष स्थान कहाताहै और चतुर्थ तथा दशमस्थान विशेषसुख होजाता है। चंद्रमा और सूर्य के सिवाय जितने मारकेश हैं सब मारक हैं। षष्ठ अष्टम और द्वादशेश राहु, केतु, द्वितीयके स्वामी, द्रेष्काणके स्वामी, विनाशकस्थान स्वामी, बिपत् तारा, प्रत्यरि के स्वामी, एकादश और द्वादश स्थान के स्वामी, द्वितीय का स्वामी, और चंद्रमा गृहका स्वामी ये सब मारक हैं। मारक अपनी दशामें मृत्युकरताहै, और अन्यकीदशामें मृत्युयोगकरताहै॥ २॥

निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्मकर्मणोः ॥
एकत्रान्यतरो वापि वसेच्चेद्योगकारकौ ॥३॥

(सम्बन्धः) धर्मकर्मणोः (नेतारौ) तौ उभौ व्यत्ययेन निवसेतां, (उभयोः) अन्यतराः वा एकत्र वसेत् चेत् (तदा) अपि योग कारकौ (भवतः) ३॥

(अर्थ) यदि केन्द्र और त्रिकोण के स्वामी अपना २ स्थान बदल कर रहें, वा दोनों में से कोई एक किसी स्थान में रहे, तो भी राजयोग करते हैं। तात्पर्य यह है कि योग चारप्रकार से होता है। कर्म स्थान में धर्मेश रहे और धर्म स्थान में कर्मेश रहे यह प्रथम योग है। धर्म स्थान में धर्मेश और कर्मेश रहे द्वितीय योग है। कर्म भाव में कर्मेश और धर्मेश र यह तृतीय योग है। दोनों में से एकही एक भाव रहे यह चतुर्थ योग है। जहां इन में से कोई योग संभव होगा वहां राजयोग होता है ॥ २ ॥

त्रिकोणाधिपयोर्मध्येसम्बन्धो येन केनचि
केन्द्रनाथस्यबलिनोभवेद्यदिसुयोगकृत॥१

(सम्बन्धः) त्रिकोणाधिपयोः मध्ये येन केन चित् यदि बलिनः केन्द्रनाथस्य सम्बन्धः भवेत् (तदा सः) सुयोगकृत् (भवति) ॥ ४ ॥

(अर्थ) पंचम वा नवम स्थान के स्वामियों में से जिस किसी के साथ दशम स्थान के स्वामी का यदि सम्बन्ध होवे, तो वह सुन्दर राजयोग करता है ॥४॥

दशास्वपि भवेद्योगः प्रायशो योगकारिणोः।
दशाद्वयीमध्यगतस्तद्युक् शुभकारिणाम् ५

(सम्बन्धः) योगकारिणोः दशाद्वयीमध्यगतः युक् शुभकारिणां दशासु अपि प्रायशः योगः भवेत् ॥ ५ ॥

(अर्थ) राजयोग करने वाले केंद्र और त्रिकोणेश की दशा से सम्बन्ध न करने वाले शुभग्रहों की दशा में भी बहुधा राजयोग होताहै। तात्पर्य यहहै कि नवमेश दशमेश की दशा के मध्यमें यदि किसी शुभग्रहकी दशा आवे तो वह दशा अवश्य राजयोगकारक होती है। इस योग के लिये इसबातकी आवश्यकता नहींहै कि नवमेश

और दशमेशके साथ अन्तर्दशावाले शुभग्रहोंका संबंध होवे। यदि संबंध होवे तो पूर्णसे पूर्णयोग होजाता है॥५॥

योगकारकसम्बंधात्पापिनोऽपि ग्रहाःस्वतः
तत्तद्भुक्त्यनुसारेण दिशेयुर्योगजं फलम् ॥६॥

(सम्बन्धः) स्वतः पापिनः अपि ग्रहाः योगकारकसम्बन्धात् तत् तत् भुक्त्यनुसारेण योगजं फलं दिशेयुः ॥ ६ ॥

(अर्थ) स्वयं अशुभ फल देने वाले भी ग्रह राजयोग करने वाले ग्रहके सम्बन्ध से उस ग्रहकी अंतर्दशा में राजयोग के फल को देते हैं। अर्थात् योग कारक ग्रह की जब अंतर्दशा आती है, तब पापग्र भी उनके साथ शुभ फल देते हैं ॥ ६ ॥

केन्द्रत्रिकोणाधिपयोरेकत्वे योगकारकौ ॥
अन्यत्रिकोणपतिना सम्बन्धो यदि किंपरम् ७

(सम्बन्धः) केन्द्रत्रिकोणाधिपयोः एकत्वे (सति उभौ) योगकारकौ (भवतः) यदि (पुनः)

अन्यत्रिकोणपतिना (सह) सम्बन्धः (तदा ततः) परं किं (श्रेष्ठम् ॥ ७ ॥

(अर्थ) एक केंद्र स्वामी का यदि एक त्रिकोणस्वामी के साथ संबंध होजावे, तो वे दोनों राजयोग करनेवाले होते हैं। परंतु यदि और त्रिकोण स्वामियों के साथ संबंध होवे, तो फिर इससे उत्तम और क्या होवेगा ? अर्थात् फिर तो उत्तम २ राजयोग का अवसर आजाता है ॥ ७ ॥

यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ ॥
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ ॥८॥

(सम्बन्धः) तमोग्रहौ यदि केन्द्रे वा त्रिकोणे निवसेतां (तत्र) अन्यतरस्य अपि नाथेन सम्बन्धात् योगकारकौ (भवतः) ॥ ८ ॥

(अर्थ) जब राहु और केतु केंद्र में वा त्रिकोण में रहें, तब केंद्र के वा त्रिकोण के स्वामी के साथ संबंध होने से, दोनों राजयोग करने वाले होते हैं। इन दोनों का सम्बन्ध इसप्रकार होता है कि जब दोनों केन्द्र में रहते हैं, तब त्रिकोणेश के साथ सम्बन्ध होता है, और जब त्रिकोण

में रहते हैं, तब केंद्र स्वामी के साथ संबंध होता है। इन सब राजयोगों के विषयमें पाराशरीमें लिखाहै, कि-यदि नवमेश मंत्रेश होवे, वा मंत्रेश नवमेश होवे, वा दोनों स्थानोंके स्वामियोंकी परस्परपूर्ण दृष्टि होवे, तो राजयोग होता है। जिस किसी स्थान में दोनों का संयोग होवे, वा दोनों बराबर सप्तम भाव में होवें, तो राजकुल में उत्पन्न होनेवाला बालक राजा होता है। वाहनेश मान-स्थान में होवे, वा मानेश वाहन स्थान में होवे, और दोनों पर राज्येश और धर्मेश की पूर्ण दृष्टि होवे, तो राजयोग होताहै। पंचमेश दशमेश चतुर्थेश और लग्नेश यदि नवमेश के साथ होवें, तो ऐसे योगवाला वह राजा होता है जिसका प्रभाव दशो दिशाओं में फैला रहता है, और जिसके यहां मतवाले हाथियोंका जमा रहता। चतुर्थेश और कर्मेश यदि पंचमेश के, धर्मेश के साथ होवें, तो इसयोग में उत्पन्न बालक राजा होता है। पंचमेश नवमेश के साथ होवे, वा २, ४, ११, में लग्नेश के साथ होवे तो राजयोग होता है। धर्म स्थान में गुरुका स्थान होवे, अपने गृहमें शुक्र होवे, और पंचमेश का साथ होवे तो राजयोग होता। शुक्र के पंचम क्षेत्र में यदि शुक्र होवे, और लाभ स्थान में शनि

होवे, तो इसयोगमें उत्पन्न पुरुष बड़ा धनी होता। बुधके
पंचम स्थानमें यदि बुध होवे, और लाभ स्थानमें चंद्रमा
और मंगल होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष बड़ा
धनी होता है। शनिके पंचम क्षेत्र में यदि सूर्य होवे,
और लाभ स्थान में बुध होवे, तो इस योग में उत्पन्न
पुरुष बड़ा धनी होता है । सूर्यके पंचम क्षेत्र में यदि
सूर्य होवे, और लाभ स्थान में सूर्य और बृहस्पति होवें,
तो इस योगमें उत्पन्न पुरुष बड़ा धनी होता है। शनि
के पंचम क्षेत्र में यदि शनि होवे, और लाभ स्थान में
मंगल होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष बड़ा धनी
होता है। बृहस्पति के पंचम क्षेत्र में यदि बृहस्पति होवे
और लाभ स्थानमें चंद्रमा और मंगल होवें, तो इसयोग
पुरुष बड़ा धनी होता है। सूर्यके क्षेत्र में यदि
सूर्य होवे, और मंगल तथा बृहस्पति की उसपर
होवे, वा सूर्य, मंगल और बृहस्पति के साथ
इस योग में उत्पन्न पुरुष धनी होताहै । चंद्रमा
में यदि लग्न में चंद्रमा होवे, और उसके साथ
और मंगल होवे, वा उनकी पूर्ण दृष्टि होवे, तो
ग में उत्पन्न पुरुष धनी होता है। मंगल के क्षेत्रमें
मंगल होवे, और उसके साथ बुध शुक्र और शनि

होवें, वा उनकी पूर्णदृष्टि होवे, तो इस योगमें उत्पन्न पुरुष धनवान् होता है। बृहस्पति के क्षेत्र में लग्न में बृहस्पति होवे, और उसके साथ बुध और मंगल होवें, वा उनकी पूर्णदृष्टि होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष धनी होता है। बुध के क्षेत्र में लग्न में बुध होवे, और उसके साथ शनि और शुक्र होवें, वा उनकी पूर्णदृष्टि होवें, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष धनी होता है। शुक्र के क्षेत्र में लग्न में यदि शुक्र होवे, और उसके साथ शनि और बुध होवें वा उनकी पूर्णदृष्टि होवे तो इस योग में उत्पन्न पुरुष धनी होता है ।

लग्नेश यदि द्वादश स्थानमें होवे, और द्वादशेश लग्नमें होवे, और उसके साथ अष्टमेश होवे, वा उसकी पूर्ण दृष्टि होवे, तो इस योगमें उत्पन्न पुरुष दरिद्री है
ग्नेश षष्ठस्थानमें होवे, वा षष्ठेश लग्नमें होवे, अ
पर अष्टमेश की पूर्णदृष्टि होवे, तो इस योग में
रुष दारिद्री होताहै। लग्न और चंद्रमा केतुके स
वा लग्नेश अस्त होगया होवे, और उस पर अ
पूर्णदृष्टि होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष दरि
है । और लग्नेश षष्ठ वा अष्टम स्थान में हो
उसके साथ पापग्रह होवे, और उस पर अष्ट

पूर्ण दृष्टि होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष चाहे वह राजकुलका ही क्यों न होवे तब भी दरिद्र होता है। लग्नेश यदि षष्ठेश अष्टमेश और द्वादशेश के साथ होवे, और उस पर पाप ग्रहों की पूर्ण दृष्टि होवे; तथा मारकेश साथ होवे, अथवा उसकी पूर्ण दृष्टि होवे, और शुभ ग्रहों की दृष्टि न होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष दरिद्र होता है। मंत्रेश और धर्मेश यदि षष्ठ और दशम स्थान में होवें, और उन दोनों पर मारकेश की पूर्ण दृष्टि होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष दरिद्र होता है। लग्न में यदि पाप ग्रह होवे, और उसके साथ राज्येश वा धर्मेश न होवें, और मारकेश का साथ होवे, वा उसकी पूर्ण दृष्टि होवे, तो इस योगमें उत्पन्न पुरुष दरिद्र होता है। जिस भाव का स्वामी अष्टम षष्ठ और द्वादश स्थान में होवे, और जिस भाव के स्वामी अष्टम षष्ठ और द्वादश स्थान में होवें, तथा उनपर पाप ग्रहों की, वा शनि की दृष्टि होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष दुखी और दरिद्र होता है। चंद्रमा का साथी नवांशेश यदि मारकेश का साथी होवे, वा वह मारक स्थान में होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष दरिद्र होता है। लग्नेश और नवांशेश यदि द्वादश षष्ठ और अष्टम स्थान में होवे, और उस

पर मारकेश की दृष्टि होवे, वा मारकेश का साथ होवे, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष दरिद्र होता है ॥ ८ ॥

धर्मकर्माधिनेतारौ रन्ध्रलाभाधिपौ यदि ॥
तयोःसम्बन्धमात्रेण न योगं लभतेनरः ९ ॥

(संबंधः) धर्मकर्माधिनेतारौ यदि रन्ध्रलाभाधिपौ (भवेताम् तदा) तयोः सम्बन्धमात्रेण नरः योगं न लभते ॥ ९ ॥

(अर्थ) यदि नवम स्थान का स्वामी अष्टम स्थान का स्वामी होवे, और दशम स्थान का स्वामी एकादश स्थान का स्वामी होवे, वा नवम स्थान का स्वामी अष्टम स्थान का स्वामी और दशम स्थान का स्वामी एकादश स्थान का स्वामी होवे तो राज योग नहीं होता ॥ ९ ॥

इति भाषानुवादसहिते उडुदायप्रदीपे राजयोगाध्यायः ॥

अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं च यत् ॥
तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते १ ॥

(संबंधः) (जन्मलग्नात्) अष्टमस्थानं आयु स्थानं (उच्यते) अष्टमात् च यत् अष्टमं (तदपि आयुः स्थानं उच्यते) तयोः अपि व्ययस्थानं मारकस्थानं उच्यते ॥ १ ॥

(अर्थ) जन्म लग्न से अष्टम स्थान, वा अष्टम स्थान से अष्टम स्थान आयुष्य का स्थान कहाता है। अर्थात् जन्म का अष्टम स्थान और अष्टम का तृतीय स्थान मारक स्थान कहाता है। तात्पर्य यह है कि अष्टम का सप्तम स्थान मारक है, और तृतीय का द्वितीय स्थान मारक है ॥ १ ॥

तत्राप्याद्यव्ययस्थानाद्द्वितीयंबलवत्तरम्
तदीशितुस्तत्रगतापापिनस्तेनसंयुताः २॥
तेषांदशाविपाकेषुसम्भवेनिधनंनृणाम् ॥
तेषामसम्भवेसाक्षाद्व्ययाधीशदशास्वपि ३

(संबंधः) तत्र अपि आद्यव्ययस्थानात् द्वि-तीयं बलवत्तरम् (भवति) तत् ईशितुः दशाविपा-

केषु सम्भवे (सति) नृणां निधनं भवेत् (अथवा) तत्रगताः तेन संयुताः (ये) पापिनः तेषां दशाविपाकेषु संभवे (सति) नृणां निधनं (भवति) तेषां असम्भवे साक्षात् व्ययाधीशदशासु अपि निधनं (भवेत्) ॥ २ ॥ ३ ॥

(अर्थ) इन दोनों मारकों में अष्टम का मारक बलवान् है, और तृतीय स्थान का तो उससे बलवान् है। इस से द्वितीयेश की दशा की अंतर्दशा में मनुष्यों का मरण होता है, वा द्वितीय स्थान में जो पापग्रह रहते हैं (षष्ठेश तृतीयेश और द्वादशेश) उनकी अंतर्दशा में मनुष्यों की मृत्यु होती है। यदि इन मारकेशों की दशा वा अंतर्दशा में मृत्यु न होवे, तो व्ययेश के जन्म लग्न से द्वादश स्थान के स्वामी की, वा उसके साथी पापग्रहों की, दशा वा अंतर्दशा में मृत्यु होती है। मनुष्य की आयुष्य तीन श्रेणी में बटी है। प्रथम स्वल्प, द्वितीय मध्यम, और तृतीय दीर्घ। बत्तीस वर्ष के पहिले जो आयुष्य समाप्त होजाती है; उसे स्वल्प कहते हैं। बत्तीस के ऊपर और सत्तर वर्ष के पहिले जो आयुष्य समाप्त होती है; उसे मध्यम कहते हैं। और सत्तर के ऊपर जो आयुष्य समाप्त

होती है; उसे दीर्घ कहते हैं। जिस का लग्नेश सूर्य होता है, वह अल्पायु है। जिस के लग्नेश शुक्र शनि और चंद्रमा हैं वह मध्यायु है। जिसके लग्नेश बुध बृहस्पति और मंगलहैं वह दीर्घायुहै। जिस पुरुषकी अल्पायु होवे, वह विपत्तारा में मृत्यु पाताहै। जिस की मध्यायु है, वह प्रत्यरितारा में, और जिसकी उत्तम है वह मारक नक्षत्र में मृत्यु पाता है। ऊपर कही हुई तीनों प्रकार की आयुष्य अल्प मध्य और उत्तम भेद से नव प्रकार की होती है। जैसे अल्पअल्पायु मध्याल्पायु उत्तमाल्पायु अल्पमध्यायु मध्यमध्यायु उत्तममध्यायु अल्पउत्तमायु मध्य उत्तमायु और उत्तमउत्तमायु। इस प्रकार प्रथम आयुष्य का निश्चयकर तब मृत्यु का विचार करना। यदि पुरुष अल्पायु सिद्धहो जावे, तो जब उसे मारकेश की दशा आवेगी, वा मारकेश के स्थान में रहनेवाले पाप ग्रहों की दशा आवेगी, वा मारकेश के साथी ग्रह की दशा आवेगी, तब उस पुरुषकी मृत्यु होवेगी। इसी भांति मध्यायु और उत्तमायु की भी मृत्यु होती है।

आयुष्य के विषय में जैमिनि सूत्र में लिखा है कि यदि लग्नेश और अष्टमेश चर राशिमें होवें, तो दीर्घायु होती है, वा लग्नेश और अष्टमेश स्थिर वा द्विस्वभाव

राशि में होवें, तो भी दीर्घायु होती है। यदि लग्नेश और अष्टमेश चरस्थिर राशिमें होवें, वा स्थिर द्विस्वभाव राशि में होवें, तो मध्यायु होती है। यदि लग्नेश और अष्टमेश स्थिर राशि में होवें, वा चरद्विस्वभाव राशि में होवें, तो अल्पायु होती है। इसी भांति शनि चंद्रमा लग्न और होरासे आयुष्य का निर्णय करना।३॥

अलाभे पुनरेतेषां सम्बन्धेन व्ययेशितुः ॥
क्वचिच्छुभानांचदशास्वष्टमेशदशासुच४॥

(संबंधः) एतेषां पुनः अलाभे व्ययेशितुः सम्बन्धेन शुभानां दशा (मृत्युदा भवति) क्वचित् अष्टमेशदशासु च (निधनं भवति) हि ॥ ४ ॥

(अर्थ) द्वादशेश, द्वादश स्थान में रहनेवाले पापग्रह, और द्वादशेश के साथी ग्रह कोई न होवें, तो द्वादशेश के साथी शुभग्रहों की दशाही में मृत्यु होती है, वा जो ग्रह अष्टमेश होवें, उनकी दशा में भी मृत्यु होती है४॥

केवलानांचपापानांदशासुनिधनंक्वचित्॥

कल्पनीयंबुधैर्नृणांमारकाणामदर्शने ॥५॥

(संबंधः) (पूर्वोक्तानां सर्वेषां) मारकाणां अदर्शने (सति) केवलानां पापानां दशासु च क्वचित् बुधैः नृणां निधनं कल्पनीयम् ॥ ५ ॥

(अर्थ) पहिले कहेहुये सब प्रकार के मारकेशों में कोई भी न होवें, तो केवल पापग्रहों की दशामें ही मृत्यु होती है । अर्थात् इस समय तृतीय षष्ठ और द्वादश स्थान के स्वामियों की दशा में ही मृत्यु होती है। चंद्रमा और सूर्यको छोड़कर जो ग्रह मारक स्थान में रहता है, वह मारक होता है। षष्ठ अष्टम और द्वादश स्थान के स्वामी, और राहु केतु में जो ग्रह एकादश स्थान के नवांश का स्वामी होता है, वह मारकेश है। इसीप्रकार चंद्रमा के स्थान का नवांशपति भी मारकेश है । इन सब की दशा में मृत्यु होती है । इन में शुभग्रह की दशा में शरीरकष्ट होता है, और पापग्रह की दशा में मृत्यु होती है ॥ ५ ॥

मारकैःसहसम्बन्धान्निहन्तापापकृच्छनिः

अतिक्रम्येतारान्सर्वान्भवत्येवनसंशयः ६

(संबंधः) पापकृत् शनिः मारकैः सह सम्बन्धात् इतरान् सर्वान् अतिक्रम्य निहन्ता भवति एव न अत्र संशयः (अस्ति) ॥ ६ ॥

(अर्थ) तृतीय षष्ठ और द्वादश स्थान का पापग्रह शनि, मारक स्थान के स्वामियों के संबंध से, और सब मारकों को हटाकर, आप मारक होता है। इस विषयमें कोई संदेह नहीं है। दशा पांच प्रकार की होती है। दशा अंतर्दशा अंतरंतर्दशा सूक्ष्मदशा और प्राण दशा। अपने नवांश में लग्नेश रहे, तो उसकी दशा शुभ होती है। लग्न का स्वामी अपने दशांश में होवे, वा द्रेष्काण में होवे तो, वह दशा विशेष शुभ होती है। लग्नेश अपने त्रिंशांश में होवे, वा अपने मित्रके त्रिंशांश में होवे, तो उसकी दशा शुभ होती है। लग्नेश बुद्धिस्थान के नवांश में होवे. वा द्वितीय और षष्ठस्थान का स्वामी होवे, वा अपने मित्रके द्रेष्काणमें होवे, तो उसकी दशा शुभ होती है। लग्नेश धर्म राशिके नवांश में होवे, वा उसके द्वितीय और षष्ठ का स्वामी होवे, वा बृहस्पति के द्रेष्काण

में होवे, तो उसकी दशा शुभ होती है। लग्नेश चतुर्थ और दशम के नवांश में होवे, वा उनके द्वितीय और षष्ठ स्थानका स्वामी होवे, वा उनके द्रेष्काण में होवे, तो उसकी दशा शुभ होती है। लग्नेश के साथ यदि लाभेश होवे, और मित्रांश में रहे, तथा मित्र ग्रहकी उसपर दृष्टि होवे, और मित्रके द्रेष्काण में होवे, तो उसकी दशा शुभ होती है। षष्ठ अष्टम और द्वादश स्थान के स्वामियोंकी दशा कष्ट देती है, इन की अन्तर्दशा कष्ट तब देती है जब मारक की दशा रहती है। मारकेश जब षष्ठेश के साथ लग्नेश होता है, तब उसकी दशा में ज्वर आता है। मारकेश रोगेश और शरीरेश के साथ जब चन्द्रमा के षड्वर्ग में रहता है, तब जल के दोषसे अजीर्ण होताही है। लग्नेश षष्ठेश के साथ जब बुध के षड्वर्ग में रहता है, तब उसकी दशा में कफ वातकी पीड़ा, और आमवातका रोग होताहै। सारिनाथ लग्नेश होकर जब बृहस्पति के षड्वर्ग में रहता है, तब उसकी दशा में रोग होता है, परन्तु ब्राह्मणको नहीं। नक्षत्रेश लग्नेश होकर यदि शुक्र के षड्वर्ग में रहे, तो उस की दशा में वायु का विकार, वा सन्निपात होता है। यदि शनि राहु और केतु रोगेश और लग्नेश के साथ

होवें, तो उसकी दशा में मनुष्यों को हिक्का (हुचकी) और विसूचिका (हैज़ा) आदि रोग होता है । इसी प्रकार भ्राता आदि भावों के स्वामी जहां होवें, उनके षड्वर्ग के सम्बन्ध से उस २ स्थान का फल कह देना।

लग्नेश और रोगेश यदि अष्टमेश के साथ होवें, तो उनकी दशामें मनुष्यको शस्त्रका घाव होताहै। यदि इस योग में कोई शुभ ग्रहका संबंध होवे तो पीड़ा मात्र होती है, और पापग्रह के संबंध में मृत्यु होती है। बृहस्पति के नवांशमें बृहस्पति के वर्गसे, और मूलके नवांश में मूलके वर्गसे रोगआदि कहना। लग्नेशका नवमांशेश और अष्टमेश यदि मेषके षड्वर्ग में होवे, तो दोनों की दशामें स्यारके काटने से मृत्युका भयहै, वही दोनों यदि वृषके षड्वर्ग में होवें, तो बिच्छू के काटने से मृत्यु का भय रहता है, मिथुन के वर्ग में वानर के काटनेका भय रहता है, कर्क के वर्ग में गर्दभ के काटने का भय रहता है, सिंह के वर्गमें सिंह से भय रहता है, कन्या के वर्ग में भालू से भय रहता है, तुलाके वर्ग में हाथी से भय रहता है, वृश्चिक के वर्गमें भी हाथी से भय रहता है; धनु के वर्ग में रथसे भय रहता है, मकर के वर्ग में ऊंट से भय रहता है, कुंभ के वर्ग में लंगूरसे भय रहता

है, और मीन के वर्ग में उन दोनों की दशा में मगर और घड़ियाल से मृत्यु का भय रहता है।

लग्नेश और अष्टमेश यदि वृष राशि में वा वृष के नवांश में, वा वृष के द्रेष्काण में होवें, तो उन दोनों की दशा में सांड़ से मनुष्य को प्राण जाने का भय रहता है। वेही दोनों वृष राशि में रह कर मिथुन के नवांश में होवें तो भालूसे, कर्क के नवांश में होवें, तो घड़ियाल से; सिंह के नवांश में होवें, तो व्याघ्र से; कन्या के नवांश में होवें; तो व्याघ्र से; बृश्चिक के नवांश में होवें; तो चिंता और खर्च; धन के नवांश में होवें, तो महिष से; कुम्भ के नवांश में होवें; तो दांत के काटने से; मकर के नवांश में होवें, तो महिष पे, और मीन के नवांश में लग्नेश और अष्टमेश होवें तो हाथी से मृत्युका भय मनुष्यों को होता है।

शरीरेश और मारकेश यदि सिंहराशि में सिंह के नवांशमें रहें, तो उन दोनों की दशा में मूसके काटने का भय, और सर्प से मृत्युका भय रहता है। शरीरेश और मारकेश यदि सिंहराशि में कन्या के नवांश में होवें; तो उन दोनों की दशामें कफ और कंप वायु से; तुला के नवांश में होवें, तो मृत्यु; बृश्चिक के नवांश में होवें, तो

सर्प से; धनु के नवांश में होवें, तो सिंह और राजा से; मीनके नवांश में होवें, तो सारंग पक्षीसे; मेषके नवांश में होवें, तो स्यार से; वृष के नवांश में होवें, तो कुत्ते से; मिथुन के नवांश में होवें, तो लंगूर से; और कर्क के नवांश में सिंहराशि के शरीरेश और अष्टमेश होवें तो मनुष्य को घड़ियाल से मृत्युका भय रहता है ॥ ६ ॥

इति भाषानुवादसहिते उडुदायप्रदीपे
आयुर्दायाध्यायः ॥

न दिशेयुर्ग्रहाः सर्वे स्वदशासु स्वभुक्तिषु ॥
शुभाशुभफलंनृणामात्मभावानुरूपतः १ ॥

(संबंधः) सूर्यादयः सर्वे ग्रहाः स्वदशासु स्वभुक्तिषु (च) नृणां शुभाशुभफलं आत्मभावानुरूपतः न दिशेयुः ॥ १ ॥

(अर्थ) सूर्य आदि सम्पूर्ण ग्रह अपनी २ दशा और अन्तर्दशा में अपने २ स्वरूप के अनुसार मनुष्यों को शुभ और अशुभ फल नहीं देते। इस श्लोक से यह सूचित होता है कि आगे इस प्रकरण में यही बात सिद्ध कीजावेगी ॥ १ ॥

आत्मसम्बन्धिनो ये च ये वा निजसधर्मिणः ॥
तेषामंतर्दशास्वेव दिशन्ति स्वदशाफलम् २

(संबंधः) ये (ग्रहाः) आत्म सम्बन्धिनः, वा ये च निज सधर्मिणः (सन्ति) तेषां अन्तर्दशासु एव स्वदशाफलं दिशन्ति ॥ २ ॥

(अर्थ) जो ग्रह अपने सम्बन्धी हैं, वा जो अपने समान हैं, उन्हीं की अन्तर्दशा में शुभ और अशुभ फल देते हैं। अर्थात् ग्रहों का परस्पर चार प्रकारका सम्बन्ध होताहै यह बात पहिले लिखी गईहै। इनचारों संबंधों में जिनके साथ कोई संबंध होताहै, वा जो शुभ होनेसे शुभ दशेश के समान हैं, वा अशुभ होने से अशुभ दशेश के समान हैं, उन्हीं की दशामें शुभ और अशुभ फल देते हैं ॥ २ ॥

इतरेषां दशानाथविरुद्धफलदायिनम् ॥
तत्तत्फलानुगुण्येन फलान्यूह्यानि सूरिभिः ३

(संबंधः) सूरिभिः इतरेषां दशानाथविरुद्धफल-

दायिनां (ग्रहाणां भुक्तिषु) तत् तत् फलानुगुण्येन फलानि ऊह्यानि ॥ ३ ॥

(अथ) जो ग्रह दशेश से संबंध नहीं रखते, वा उस के समान नहींहैं, किंतु दशेश के विरुद्ध फल देनेवाले हैं, उनग्रहों की अंतर्दशा में उनके फलके अनुसार दशेश भी शुभाशुभ फल देते हैं। तात्पर्य यहहै कि यदि दशेश शुभ फल देनेवालाहै, परंतु और ग्रह अशुभ फल देनेवालेहैं, तो उन शुभ ग्रहोंकी अंतर्दशामें, दशेश भी शुभ फल देता है। वह स्वयं शुभाशुभ फल नहीं देता ॥ ३ ॥

स्वदशायांत्रिकोणेशभुक्तौकेन्द्रपतिःशुभम्
दिशेत्सोऽपितथानोचेदसम्बन्धेनपापकृत्

(संबंधः) (सति संबंधे) केन्द्रपतिः स्वदशायां त्रिकोणेशभुक्तौ शुभं दिशेत्, सः अपि तथा, नो चेत् असम्बन्धेन पापकृत् (भवति) ॥ ४ ॥

(अर्थ) केंद्र का स्वामी अपनी दशा में संबंध रहने पर त्रिकोणेश की अंतर्दशा में शुभ फल देताहै, और त्रिकोणेश भी अपनी दशा में केंद्रके साथ यदि सम्बंध होवे,

तो अपनी अंतर्दशा में शुभ फल देताहै। यदि दोनोंका परस्पर संबंध न होवे तो दोनों अशुभ फल देते हैं।

यहांपर कुछ फल प्रसंग से लिखते हैं। यदि लग्न में सूर्य मंगल राहु और शनि होवें, तो मन में संताप रहता है, और रक्तकी बीमारी रहती है। परंतु यदि शुभ ग्रह होवें तो सब रोग नष्ट होजाताहै। यदि द्वितीय स्थानमें रहनेवाले सब ग्रह क्रूर होवें, तो धनकी हानि होती है। परंतु शुभ ग्रहोंके रहने से शुभ होताहै, सब प्रकारकी ऋद्धि और वृद्धि होतीहै, और धन प्राप्ति होतीहै। तृतीय स्थानके सब ग्रह यदि पाप ग्रह होवें, तो भाई बंधुका नाश होता है। परंतु यदि शुभ ग्रह होवें, तो यशस्वी और धनी होता है। चतुर्थ स्थानके रहनेवाले पाप ग्रह, पुरुष को बालक अवस्थामें माता का कष्ट देतेहैं। परंतु शुभ ग्रह होवें, तो सुख और राजाकी ओरसे सन्मान देतेहैं। पंचम स्थानके सब पाप ग्रह संतान को नष्ट करते हैं, और यदि पंचम में मंगल होवे, तो कुपुत्र (कपूत) पैदा होताहै। परंतु यदि वे सब शुभ ग्रह होवें, तो पुत्र का सुख देतेहैं। षष्ठस्थान के क्रूरग्रह मनुष्यके सब शत्रुका नाश करते हैं, परंतु शुभ ग्रह महाघोर कष्ट देतेहैं, और षष्ठस्थानका चंद्रमा मृत्यु करताहै। सप्तमके क्रूरग्रह कुरूप

और क्रूर स्त्री देतेहैं। परंतु शुभग्रह सुंदरी स्त्री देतेहैं, और बृहस्पति तथा शुक्र सुंदरी और युवती भार्या देते हैं। अष्टम के शुभग्रह बड़े कष्ट दायक होतेहैं, और जन्मका चंद्रमा बड़ाही कष्ट देताहै। नवम स्थानके पापग्रह मनुष्यको पापी बनातेहैं, परंतु शुभग्रह धर्मिष्ठ सुशील और पुण्यवान् करतेहैं। दशम स्थानके क्रूरग्रह मनुष्यको दरिद्र करते हैं। परंतु शुभग्रह भाग्य और सुख करते हैं। एकादश स्थानके सब ग्रह राज्य और लाभकारक होते हैं, और शुभ ग्रह हाथी घोड़ा नौकर और गृह आदि से परिपूर्ण करते हैं। द्वादश स्थानके शुभ ग्रह मनुष्य को दुष्ट काना दरिद्र और दुर्बल करते हैं। यहां इतना और समझना उचित है कि यदि राशिका स्वामी बलवान होवे, वा उस स्थानका ग्रह प्रबल होवे, वा वह उच्च का होवे, तो राशिका फल सम्पूर्ण होताहै। यदि वह नीच का होवे तो फल में न्यूनता होती है।

प्रसंगसे यहभी लिख देना अनुचित न होवेगा कि किस राशिमे किस फल का विचार करना। जन्मलग्न से स्वरूप का विचार करना। द्वितीय से रत्न मोती सुवर्ण रुधिर अष्टधातु और बेचना खरीदना आदि का विचार करना तृतीयसे बहिन भाई दास और भृत्योंका विचार

करना। मित्र सुख दुःख वृद्धि स्थान हानि लाभ माता गृह और ग्राम आदि का चतुर्थ से विचार करना। पंचम भाव से गर्भ संतान मंत्र संधि विद्या बुद्धि और प्रबंध आदि का विचार करना। गौ, शत्रु, युद्ध मोखा क्रूरकर्म मामा भय और शंकाआदि का षष्ठस्थानसे विचारकरना। सप्तमस्थान से वाणिज्य व्यवहार शत्रुके साथ विवाद हानि लाभ और स्त्रीका विचार करना। अष्टम स्थान से, नदी उतरना भयंकरस्थान में जाना शत्रुका संकट नष्टहोना काटना युद्ध और रोग का विचार करना। बावली कूप तालाब आदि का बनाना, पौसरा बैठाना, देवमंदिर बनाना, मंत्र दीक्षा लेना, यात्रा करना मठ और धर्मशाला बनाना, यह सब नवम स्थान से विचार करना। राज्य की मोहर, बड़ा पुण्य, स्थान, पिता, प्रयोजन, वृष्टि और आकाश के नक्षत्रों का विचार दशम स्थान से करना। एकादश स्थान से हाथी घोड़ा रथ वस्त्र धान्य सुवर्ण कन्या विद्या और धन लाभ का विचार करना। द्वादश स्थान से दान भोग विवाह त्याग यज्ञ और खेती बारी का विचार करना॥ ४॥

आरम्भो राजयोगस्य भवेन्मारकभुक्तिषु॥

प्रथयन्ति तमारभ्य क्रमशः पापभुक्तयः ५ ॥

(संबंधः) मारकभुक्तिषु राजयोगस्य (यदि) आरम्भः भवेत् (तदा) पाप भुक्तयः तं आरभ्य (राजयोगं) प्रथयन्ति ॥ ५ ॥

(अर्थ) यदि द्वितीयेश और सप्तमेश की अंतर्दशा में राजयोग का प्रारंभ होवे, तो पाप ग्रह की दशायें उसे राजयोग भर कर देती हैं, परंतु उसकी श्रीवृद्धि नहीं होती, अर्थात् वह राजा तो अवश्य होता है, परंतु उसका खजाना, वा हाथी घोड़ा, वा ग्राम भूमि आदि नहीं बढ़ती ॥ ५ ॥

तत्सम्बन्धिशुभानां च तथा पुनरसंयुजाम् ॥
शुभानां तु समत्वेन संयोगो योगकारिणाम् ६

(संबंधः) तत्-सम्बन्धिशुभानां, यथा पुनः असंयुजां योगकारिणां शुभानां तु संयोगः समत्वेन (स्यात्) ॥ ६ ॥

(अर्थ) राजयोग करनेवाले ग्रहों की महादशा में उन के साथी शुभग्रहों की अंतर्दशा हो, वा राजयोग करने-

वाले ग्रहों के साथ न रहनेवाले ग्रहों की अंतर्दशा हो, दोनों ही में शुभफल समान होता है। इसी भांति पाप-ग्रह की महादशा में, उसके साथी पाप ग्रह की अंतर्दशा हो, वा उसके साथ न रहनेवाले पाप ग्रह की अंतर्दशा हो, दोनों ही में अशुभ फल समान होता है ॥ ६ ॥

शुभस्यास्यप्रसक्तस्यदशायांयोगकारकाः
स्वभुक्तिषुप्रयच्छन्तिकुत्रचिद्योगजंफलम् ७

(संबंधः) अस्य शुभस्य दशायां योगकारकाः (ग्रहाः) स्वभुक्तिषु कुत्र चित् योगजं फलं प्रयच्छन्ति ॥ ७ ॥

(अर्थ) राजयोग करनेवाले शुभग्रह की महादशा में, उसके साथी राजयोग करनेवाले शुभग्रह अपनी २ अंतर्दशा में कदाचित् राजयोग का फल देते हैं। अर्थात् राजयोग करनेवाले ग्रहकी महादशा में जब राजयोग करनेवाले ग्रहकी अंतर्दशा आती है तब वह अपना फल देती है ॥ ७ ॥

तमोग्रहौ शुभारूढावसम्बन्धेनकेनचित् ॥

अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योगकारकौ ॥८॥

(संबंधः) तमोग्रहौ केनचित् असम्बन्धेन (यदि) शुभारूढौ (भवेतां) (तदा) अन्तर्दशानुसारेण योगकारकौ भवेताम् ॥ ८ ॥

(अर्थ) किसी राजयोग कारक ग्रहके साथ संबंध न रहने के कारण राजयोग न करनेवाले राहु और केतु यदि प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम पंचम और नवम स्थान में से कहीं रहैं, तो राजयोग कर्ता ग्रहकी जब अंतर्दशा आवेगी तभी राजयोग का फल करते हैं। उसमें भी शुभ ग्रहकी अंतर्दशा में शुभ, अशुभ ग्रह की अंतर्दशा में अशुभ फल करते हैं ॥ ८ ॥

पापा यदि दशानाथाः शुभानां तदसंयुजाम्
भुक्तयः पापफलदास्तत्संयुक्शुभभुक्तयः ९
भवन्ति मिश्रफलदा भुक्तयो योगकारिणाम्
अत्यन्तपापफलदा भवन्ति तदसंयुजाम् १०

(संबंधः) दशानाथाः यदि पापाः (स्युः तदा

तदसंयुजां शुभानां भुक्तयः पापफलदाः (भवन्ति) तत्संयुक्तशुभभुक्तयः मिश्रफलदाः भवन्ति, तदसंयुजां योगकारिणां भुक्तयः (तु) अत्यन्तपापफलदाः भवन्ति ॥ ६ ॥ १० ॥

(अर्थ) यदि महादशा का स्वामी पाप ग्रह होवे, तो उसके साथ संबंध न रखनेवाले पापग्रहों की अंतर्दशा अशुभ फल देती हैं, उसके (दशेश के) साथ संबंध रखनेवाले शुभ ग्रहों की अंतर्दशा मिश्रित (कुछ शुभ और कुछ अशुभ) फल देती हैं, उसके साथ संबंध न रखनेवाले और राजयोग कारक पापग्रहों की अंतर्दशा महा कष्ट देती हैं ॥ ९ ॥ १० ॥

सत्यपि स्वेन सम्बन्धे न हन्ति शुभभुक्तिषु।
हन्ति सत्यप्यसम्बन्धे मारकः पापभुक्तिषु ११

(संबंधः) मारकः स्वेन सम्बन्धे सति अपि शुभभुक्तिषु न हन्ति, सति अपि असम्बन्धे पापभुक्तिषु (तु) हन्ति (एव) ॥ ११ ॥

(अर्थ) मारक ग्रह के साथ यदि शुभ ग्रह का संबंध

होवे, तो भी शुभ ग्रह की दशा में मारक मनुष्य का प्राण नहीं लेता, और अपने साथ संबंध न रहने पर भी पाप ग्रह की दशा में मारकग्रह मनुष्य का प्राण लेताही है। इससे मारकेश की दशा में शुभ और पाप ग्रह की अंतर्दशा ही मारक और रक्षक है उसके साथ संबंध कुछ नहीं कर सकता ॥ ११ ॥

परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ ॥
व्यत्ययेनविशेषेणप्रदिशेतांशुभाशुभम् १२

(संबंधः) सूर्यजभार्गवौ परस्परदशायां स्वभुक्तौ विशेषेण वैपरीत्येन शुभाशुभं प्रदिशेताम् ॥ १२ ॥

(अर्थ) शनि और शुक्र दोनों एक की महादशा में दूसरे की अंतर्दशा आने पर अवश्यही उलट पुलट कर शुभ और अशुभ फल देते हैं। तात्पर्य यह है कि यदि शुक्र की महादशा में शनि की अंतर्दशा आवे, तो शुक्र की दशा का फल नहीं होता किंतु उसके बदले में शनि की दशा का अशुभ फल ही होता है। इसीप्रकार शनिकी महादशा में शुक्र की अंतर्दशा आवे, तो शनि की दशा का अशुभ फल नहीं होता, किंतु शुभ फल होताहै ॥१२॥

कर्मलग्नाधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ
राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत्

(संबंधः) कर्मलग्नाधिनेतारौ अन्योन्याश्रयसंस्थितौ (यदि तदा) राजयोगौ इति प्रोक्तं (तथा सति जातः) विख्यातः विजयी (च) भवेत्॥ १३॥

(अर्थ) यदि दशमेश लग्नेश के स्थान में होवे, तो दोनों राजयोग करनेवाले होते हैं। इस योग में उत्पन्न पुरुष जगत् में प्रसिद्ध और संग्राम में विजय करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

धर्मकर्माधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ॥
राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत्

(संबंधः) धर्मकर्माधिनेतारौ अन्योन्याश्रयसंस्थितौ (यदि तदा) राजयोगौ इति प्रोक्तं (तथा सति जातः) विख्यातः विजयी (च) भवेत् ॥ १४॥

(अर्थ) यदि नवमेश दशमेश के स्थान में होवे, वा दशमेश नवमेश के स्थान में होवे, तो दोनों राजयोग करनेवाले होते हैं। इस योग में उत्पन्न पुरुष जगत् में

प्रसिद्ध और संग्राम में विजय करनेवाला होता है।

यहां पर अवसर देख ग्रहों के स्वाभाविक फल और उनके शांतिके उपाय लिख देते हैं। राज्य मूंगा लालवस्त्र माणिक्य राज वन पर्वत खेत और पिता का करनेवाला सूर्य है। माता मनका संतोष सुगंध रस ऊख गोहूं खार पृथिवी दांत शक्ति कार्य धान्य और रजत आदिका करनेवाला चंद्रमा है। बल गृह भूमि पुत्र शील चोरी रोग ब्रह्मतेज भ्राता पराक्रम अग्नि साहस और राजा को शत्रु करनेवाला मंगल है। ज्योतिष भाषा गणित नाचना वैद्य हास्य भय लक्ष्मी और कला में कौशल आदि करनेवाला बुध है। अपना निजका कर्म, यज्ञ करना, देवता ब्राह्मण धन गृह सुवर्ण वस्त्र पुत्र मित्र और आंदोलन आदि करनेवाला बृहस्पति है। स्त्री कामीपन सुख गीत शास्त्र काव्य पुष्प सुकुमारता यौवन अलंकार रजत सवारी अभिमान मोती धन कविता और मधुर आदि रसका करनेवाला शुक्र है। भैंसा घोड़ा हाथी तेल वस्त्र श्रृंगार विदेशयात्रा काष्ठ शस्त्र शूद्र नीलम ब्राह्मण केश घाव शूलरोग दास दासी और आयुष्य आदिका करनेवाला शनि है। विदेशयात्रा समय सर्प रात्रि और सूत आदि करने-

वाला राहु है। घाव चर्मरोग शूल फोड़ा क्षुधा और पीड़ा आदि करनेवाला केतु है।

ग्रहशांति। मानिक, गेहूं, लाल गौ और बछवा, लालवस्त्र, घी, सुवर्ण, और ताम्र के दान से सूर्य प्रसन्न होता है। शंख, सफेद चँवर, कपूर, मोती, सफ़ेद वस्त्र, जोड़ा यज्ञोपवीत, सफेद बैल, चांदी और घीका भरा घड़ा के दानसे चंद्रमा संतुष्ट होता है। मूंगा, गेहूं, मसुरी, लाल बैल, सुवर्ण, लालवस्त्र, लाल कनइल का फूल और तांबा के दानसे मंगल संतुष्ट होताहै। नीलावस्त्र फल, कांसा, मूंग, घी, चांदी, पुष्प, दासी और हाथीदांत का दान बुध को संतुष्ट करता है। चीनी, हरदी, घोड़ा, पीलाधान, पीलावस्त्र, पुखराज, नवरत्न और सुवर्ण के दान से बृहस्पति प्रसन्न होता है। रंग, बिरंगा, वस्त्र, सफेद घोड़ा, सफेद गौ, हीरा, चांदी, सुवर्ण, चावल, सफेद चंदन और घी के दानसे शुक्र प्रसन्न होता है। उड़द, तेल, नीलम, तिल, कुलथी, भैंसा, लोहा और काली गौ के दानसे शनि प्रसन्न होता है। गोमेद, घोड़ा, नीलावस्त्र, कालाकंबल, तिल, तेल, और लोहा के दानसे राहु संतुष्ट होता है। वैडूर्य, तिल, तेल, कस्तूरी, और नीलावस्त्र के दानसे केतु

संतुष्ट होता है। जप, होम, स्तुति, देवता और ब्राह्मणों की पूजा से कुदशा का फल नहीं होता ॥ १४ ॥

इति भाषानुवादसहिते उडुदायप्रदीपे अंतर्दशाध्यायः॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥

शुभं भूयात्।

विंशोत्तर्यां दशायां सूर्यादि भोग्यवर्षज्ञापकं चक्रम् ।

सू.	चं.	मं	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहाः
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्षाणि
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य.	आ.	म.	पू.फा.	नक्षत्राणि
उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	
उ.ष.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अ.	भर.	

विंशोत्तर्यां दशायां सूर्यमहादशायां अन्तर्दशाचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्र.
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष.
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	मास.
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	दिन.

तत्रैव चन्द्रान्तर्दशाचक्रम् ।

चं.	मं.	रा.	बृ	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्र.
०	०	१	१	१	१	०	१	०	वर्ष
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

तत्रैव भौममहादशान्तर्दशाचक्रम् ।

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ग्र.
०	१	०	१	०	०	१	०	०	वर्ष
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मास
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	दिन

तत्रैव राहुमहादशायामन्तर्दशाचक्रम् ।

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ग्र०
२	२	२	२	१	३	०	१	१	व०
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	मा०
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	दि०

तत्रैव गुरुमहादशायामन्तर्दशाचक्रम् ।

बृ.	श	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ग्र०
२	२	२	०	२	०	१	०	२	व०
१	६	३	११	८	९	४	११	४	मा०
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	दि०

तत्रैव शनिमहादशायामन्तर्दशाचक्रम् ।

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ग्र०
३	२	१	३	०	१	१	२	२	व०
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	मा०
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	दि०

तत्रैव बुधमहादशायामन्तर्दशाचक्रम् ।

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्र०
२	०	२	०	१	०	२	२	२	व०
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	मा०
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	दि०

तत्रैव केतुमहादशायामन्तर्दशाचक्रम् ।

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्र०
०	१	०	०	०	१	०	१	०	व०
४	२	४	७	४	०	११	१	११	मा०
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	दि०

तत्रैव शुक्रमहादशायामन्तर्दशाचक्रम् ।

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्र०
३	१	१	१	३	२	३	२	१	व०
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	मा०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि०

॥ इति दशान्तर्दशाचक्रम् ॥